वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

शुक्रवार, चैत्र कृष्ण पक्ष, पंचमी, कलियुग वर्ष ५१२२ (२ अप्रैल, २०२१)

# वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

## कलका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

३ अप्रैल २०२१ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२२ / विक्रम संवत – २०७७ / शकवर्ष - १९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-03042021

## देव स्तुति

**नमस्ते सर्वभक्षाय बलीमुख नमोऽस्तु ते।**
**सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च॥**

**अर्थ :** सूर्यनन्दन, भास्कर-पुत्र, अभय देनेवाले देवता, बलीमुख आप सब कुछ भक्षण करनेवाले हैं, ऐसे शनिदेवको प्रणाम है।

## शास्त्र वचन

**आचारः कुलमाख्याति देशमाख्याति भाषणम्।**
**सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति वपुराख्याति भोजनम्॥**

**अर्थ :** आचरणसे व्यक्तिके कुलका परिचय मिलता है। बोलीसे

देशका पता लगता है। आदर-सत्कारसे प्रेमका तथा शरीरको देखकर व्यक्तिके भोजनका पता चलता है।

**********

**न च कुर्यान्नरो दैन्यं शाठ्यं क्रोधं तथैव च।**
**जैहयं च मत्सरं वैरं सर्वत्रेदं न कारयेत्॥**
**मातरं पितरं ज्येष्ठं विद्वांसं च तपोधनम्।**
**क्षमावन्तं च राजेन्द्र नावमन्येत बुद्धिमान्॥**
**शक्तस्तु क्षमते नित्यमशक्तः क्रुध्यते नरः।**
**दुर्जनः सुजनं द्वेष्टि दुर्बलो बलवत्तरम्॥**
**रूपवन्तमरूपी च धनवन्तं च निर्धनः।**
**अकर्मी कर्मिणं द्वेष्टि धार्मिकं च नधार्मिकः॥**
**निर्गुणो गुणवन्तं च पुत्रैतत्कलिलक्षणम्।**
**विपरीतं च राजेन्द्र एतेषु कृतलक्षणम्॥**

**अर्थ :** इन्द्रदेवताके पूछनेपर कि वृद्धावस्था देकर महाराज ययातिने पुरुको क्या आदेश दिया महाराज ययाति कहते हैं : देवेन्द्र ! मनुष्य दीनता, शठता और क्रोध न करे।

कुटिलता, मात्सर्य और वैर कहीं न करे। माता, पिता, विद्वान, तपस्वी तथा क्षमाशील पुरुषका, बुद्धिमान मनुष्य, कभी अपमान न करे। शक्तिशाली पुरुष सदा क्षमा करता है। शक्तिहीन मनुष्य सदा क्रोध करता है। दुष्ट मानव साधु पुरुषसे और दुर्बल अधिक बलवानसे द्वेष करता है। कुरूप मनुष्य रूपवानसे, निर्धन धनवानसे, अकर्मण्य कर्मनिष्ठसे और अधार्मिक धर्मात्मासे द्वेष करता है। इसी प्रकार गुणहीन मनुष्य गुणवानसे डाह रखता है।

**१. मुझसे बडे दुर्गुण दूर नहीं होते तो छोटे दुर्गुण दूरकर क्या करूंगा ? यह है एक अयोग्य दृष्टिकोण ।**

हमारे श्रीगुरुके अनुसार स्वभावदोष निर्मूलन गुरुकृपायोगानुसार साधनाका प्रथम चरण है । एक जिज्ञासुकी साधनाकी उत्कण्ठा देखकर, जब मैंने उन्हें नित्य चूकें लिखने हेतु बताया तो उन्होंने मुझसे कहा, "मुझमें बडे-बडे दोष हैं और उन्हें दूर करनेमें ही मैं असफल हो जाता हूं । प्रतिदिन सोचता हूं और प्रतिदिन पुनः अपनी आसक्तियोंके आवेशमें वही चूकें हो जाती हैं । ऐसेमें छोटे दुर्गुण जैसे आलस्य, ईर्ष्या इत्यादि दूर करनेकी इच्छा नहीं होती है । सच पूछें तो मुझे चूक लिखनेकी इच्छा होती ही नहीं है ।"

**ऐसे लोगोंने निम्न बातोंका ध्यान रखना चाहिए :-**

**अ.** यदि आपको चूक लिखनेकी इच्छा नहीं होती है तो उसके लिए भी स्वयंसूचना इसप्रकार दें :-

जब-जब मुझे चूक लिखनेकी इच्छा नहीं होगी, तब-तब मुझे भान होगा कि चूकें ढूंढकर लिखनेसे अन्तर्मुखतामें वृद्धि होती है एवं इससे दोष न्यून होनेकी प्रक्रिया आरम्भ होती है; अतः मैं इसे प्रतिदिन लिखनेका प्रयास करुंगा/करुंगी ।

**आ.** यदि हमें कोई व्यसन है तो ध्यान रखें कि ९०% व्यसन अनिष्ट शक्तियोंका हमारे भीतर स्थान होनेके कारण ही होता है; इसलिए उस व्यसनसे मुक्त होने हेतु सबसे सरल उपाय है, दोष निर्मूलन करते हुए सर्व आध्यात्मिक उपचार करना एवं योग्य साधना करना । इससे अनिष्ट शक्तियोंके स्थान नष्ट होते हैं एवं हमारा व्यसन सदैवके लिए दूर हो जाता है ।

**इ.** दुर्गुण कभी भी छोटे या बडे नहीं होते हैं । किन्तु यदि

आपको कोई दुर्गुण छोटा लगता है तो उसे ही दूर करनेका प्रयास करें, इस हेतु उस दुर्गुणसे सम्बन्धित चूकें लिखें उसमें सुधार हेतु स्वयंसूचना दें एवं उसकी प्रगतिको भी अंकित करें। जैसे ही एक दोष न्यून होगा, वैसे ही आपको दूसरे दोष दूर करने हेतु प्रोत्साहन मिलेगा और इस प्रकार आपसे बडे दुर्गुण दूर करने हेतु भी प्रयत्न आरभ हो जाएंगे।

**********

**२. शंका समाधान**

**लाल चीटियोंका घरसे न जाना है, अनिष्ट शक्तियोंके वासका संकेत**

**प्रश्न : मेरे वडोदरा निवासके परिसरमें वर्षोंसे बहुत अधिक संख्यामें लाल चींटियोंका निवास है। उन्हें मारना नहीं है। कई प्राकृतिक उपाय किए जैसे कि आटा, आटा-'नमक', हलदी। उसी परिसरमें देशी गीर गोमाताएं (मां-बेटी) भी रहीं। उनका भरपूर मूत्र भी भूमिमें गया है और उनका गोमय भी मिट्टीमें मिला है। साथ ही घरमें चिडचिडापन, सिरकी वेदना, दुर्बलता, ऊर्जाकी न्यूनता रहती है। कृपया कोई उपाय बताएं कि ये चींटियां सस्नेह हमारे घरसे चली जाएं।**

**- रोहित पारेख, वडोदरा, गुजरात**

**उत्तर :** रोहितजी, मैं सभी गोभक्तोंसे कहती हूं कि प्रत्येक समस्याका समाधान गोमातासे नहीं हो सकता है। उनकी भी अपनी मर्यादा है। यदि सब कुछ उनसे साध्य हो जाता तो ईश्वर इस ब्रह्माण्डमें देवी-देवताओंका निर्माण ही नहीं करते। मैं जानती हूं कि आप हिन्दुत्वनिष्ठ है और गोभक्त भी। तो सर्वप्रथम आपके प्रकरणकी सूक्ष्म समीक्षासे जो ज्ञात होता है वह बताती हूं। आपके घरमें पितृदोष तो है ही साथ ही दूसरे

पातालके मान्त्रिकका आक्रमण भी है। आपको पता है या नहीं मुझे ज्ञात नहीं; किन्तु आपको बता दें कि जैसे साथ उच्च लोक होते हैं (भू, भुव, स्वर्ग, महः, जन, तप एवं सत्यलोक) वैसे ही सप्त पाताल होते हैं (अतल, वितल, नितल, गभस्तिमान, महातल, सुतल एवं पाताल)। जैसे उच्च लोकोंमें बढते क्रमानुसार उच्च कोटिके साधक एवं उन्नत जीवों या जीवात्माओंका निवास होता है, वैसे ही पातालमें जैसे-जैसे नीचे जाते हैं और अधिक शक्तिशाली आसुरी शक्तियोंका वास होता है। वर्तमान कालमें हिन्दुत्व हेतु कार्य करनेवाले सभी कार्यकर्ताओं, साधकों, उन्नतों एवं सन्तोंपर भी मान्त्रिकका सूक्ष्म स्तरपर आक्रमण हो रहा है। ऐसे आक्रमणसे बचने हेतु सन्तद्वारा बताए योग्य उपाय करना अति आवश्यक है।

आपके घरपर हो रहे इस कष्ट हेतु वैदिक उपासना पीठद्वारा बताए गए वास्तु-शुद्धिके सभी प्रयत्न करने होंगे एवं जो आपको पारिवारिक या व्यक्तिगत स्तरपर कष्ट हो रहे हैं, उस हेतु आप उपासनाके आध्यात्मिक उपचार केन्द्रमें सम्पर्ककर अपना पंजीकरण करवाकर योग्य उपचार जान सकते हैं। साथ ही योग्य साधना करनेका प्रयास करें। उपचार केन्द्र सम्पर्क क्रमांक इस लेखके अन्तमें आवश्यक सूचनाओंमें दिया गया है।

**********

## ३. आध्यात्मिक परिभाषामें शिष्यका पद, कोई सामान्य पद नहीं होता

कुछ जिज्ञासु किसी सन्तसे जुडनेपर स्वयंको उनका शिष्य सम्बोधित करने लगते हैं, जबकि वे आध्यात्मिक दृष्टिसे इस पदवीसे कोसों दूर होते हैं। तो शिष्यसे पहले कौन-कौनसे चरण होते हैं यह जानना आवश्यक है। यह मैं इसलिए बता

रही हूं कि आप भी अन्तर्मुख होकर आप किस चरणमें यह देखें ! तो गुरुके पास जो भक्तोंका गुट होता है उसे पांच श्रेणीमें विभाजित किया जा सकता है । प्रथम कार्यकर्ता, द्वितीय जिज्ञासु, तृतीय साधक, चौथे अच्छे साधक एवं पांचवा शिष्य। अब आप इनकी विशेषता बताती हूं, इन्हें अन्तर्मुख होकर पढकर अपना वर्गीकरण स्वयं कर लें !

सबसे निचले क्रमांकपर होते हैं कार्यकर्ता - ये मात्र कार्य करने हेतु इच्छुक होते हैं, इन्हें साधना करनेकी इच्छा नहीं होती है, वे यदि साधना करते भी हैं तो मनानुसार करते हैं। अर्थात गुरुसे तो किसी कारणवश जुड जाते हैं; किन्तु वे साधना वही करते हैं जो उनके मनको अच्छी लगती हो। ऐसे कार्यकर्ता सामान्यत: किसी स्वार्थवश किसी सन्तसे जुडते हैं। ऐसे सदस्य व्यक्तिनिष्ठ होते हैं। मात्र जब गुरु कहे तो ही ये कुछ करते हैं, वह भी आज्ञापालन मानकर नहीं करते हैं, उन्हें जितना इच्छा होती है उतना ही करते हैं । ऐसे सदस्यकी सेवामें सातत्य नहीं होता। ये आसक्त एवं भावनाप्रधान होते हैं। चूकें बतानेपर वे कदापि उसे स्वीकार नहीं करते हैं, अनेक बार वे सन्तोंमें ही चूक निकाल देते हैं। चूक होनेपर यदि उन्हें दृष्टिकोण दिया जाए तो उन्हें त्वरित साधना, गुरु व ईश्वरके विषयमें विकल्प आ जाता है। उनकी इच्छा हो तो वे कभी सेवा करते हैं कभी नहीं करते हैं । अनेक बार वे गुरुके साधकोंसे अर्थलाभ हेतु या सामाजिक प्रतिष्ठा हेतु या अन्य कोई स्वार्थसिद्धि हेतु ही सन्तसे जुडते हैं । कार्यकी दृष्टिसे सन्त उन्हें अपने पास रखते हैं या कार्य करते-करते क्या पता उनका विवेक जाग्रत हो जाए और उनमें कुछ परिवर्तन आना आरम्भ हो जाए इसकारण भी रखते हैं।

कार्यकर्तासे अगले क्रमांकपर होते हैं जिज्ञासु - ये साधक

और कार्यकर्ताके मध्यके होते हैं । इनमें थोडे अवगुण कार्यकर्ताके होते हैं और थोडे गुण साधकके होते हैं । इन्हें अध्यात्ममें थोडी जिज्ञासा होती है, उनकी यह विशेषता उन्हें कार्यकर्तासे आगेकी श्रेणीमें रखती है और उनसे थोडे प्रमाणमें आज्ञापालन भी होता है । अर्थात वे तन, मन धनसे या मात्र इनमेंसे किसी एकसे साधना करनेका प्रयास करते हैं । ये अध्यात्ममें आगे जा सकते हैं । इन्हें गुरुके प्रति विश्वास होता है; किन्तु उनकी बातोंपर संशय भी रहता है ।

उसके अगले क्रमांकपर हैं साधक - ये गुरुके बताए अनुसार साधना करनेका प्रयास करते हैं | इसे नियमित भी करनेका प्रयास करते हैं । साधना करनेके कारण इन्हें अनुभूतियां होती हैं; फलस्वरूप इन्हें गुरुके प्रति श्रद्धा है । ये अच्छे साधकोंसे सीखकर आगे जा सकते हैं ।

उसके अगले क्रमांकपर होते हैं अच्छे साधक - ये अपने तन, मन, धन व बुद्धिसे सातत्यसे सेवा करते हैं, प्रतिदिन दोष निर्मूलन एवं अहम् निर्मूलन हेतु प्रयास करते हैं । घरपर अपनी सेवा सम्भालते हुए पांचसे सात घण्टे व्यष्टि करते हुए समष्टि सेवा करते हैं या आश्रममें भी रहकर सेवारत होते हैं । इनमें भाव होता है, गुरुके आध्यात्मिक दृष्टिकोण देनेपर भी इन्हें विकल्प नहीं आता है । इनमें स्वार्थकी वृत्ति नहीं होती है और इनका भाव और त्याग बहुत अच्छा होता है अर्थात मुझसे मात्र अध्यात्ममें आगे जाना है यह प्राप्त करनेकी इच्छा होती है । ये आगे शिष्य बन सकते हैं ।

सबसे शीर्षपर होता है शिष्य - जो अपना सर्वस्व गुरुको अर्पणकर मात्र गुरुकार्य हेतु ही जीवित रहता है उसे शिष्य कहते हैं, ऐसे शिष्य पूर्णकालिक साधक होते हैं, उनके लिए गुरु आज्ञा वेद-वाक्य होती है। सांसारिक आसक्तिसे मुक्त

होकर वह गुरु चरणोंमें रहकर मात्र अपने गुरु और गुरुकार्यका ही विचारकर सर्व कृत्य करता है।

तो आप सोच रहे होंगे कि गुरु सबको साधक या शिष्य क्यों कहते हैं ?, वह बोली भाषामें गुरु कहते हैं। वस्तुतः जैसी साधककी भक्ति होती है गुरु वैसा ही कार्य करते हैं।

अब आप अपनी श्रेणी स्वयं निर्धारित कर लें ! स्वयंको किसी गुरुका शिष्य कहनेसे पूर्व अपनी पात्रताके विषयमें अवश्य ही आत्मविश्लेषण करें !

**– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक**

## प्रेरक प्रसंग

### रामका वास कहां होता है ?

एक संन्यासी घूमते-फिरते एक आपणिपर आया । वहां अनेक छोटे-बडे डिब्बे थे।

संन्यासीके मनमें जिज्ञासा उत्पन्न हुई और उसने एक डिब्बेकी ओर संकेत करते हुए व्यापारीसे पूछा, "इसमें क्या है ?"

व्यापारीने कहा, "इसमें 'नमक' है।"

संन्यासीने पुन: पूछा, "इसके पासवालेमें क्या है ?"

व्यापारीने कहा, "इसमें हलदी है।"

इसी प्रकार संन्यासी पूछता गया और व्यापारी बतलाता रहा। अन्तमें पीछे रखे डिब्बेका क्रम आया।

संन्यासीने पूछा, "उस अन्तिम डिब्बेमें क्या है ? "

व्यापारीबोला, "उसमें राम-राम है।"

संन्यासीने विस्मित होते हुए पूछा, "राम-राम ? भला यह राम-राम किस वस्तुका नाम है, भाई ? मैंने तो इस नामकी किसी या वस्तुके बारेमें कभी नहीं सुना।"

व्यापारी संन्यासीके भोलेपनपर हंसकर बोला, "महात्मन । और डिब्बोंमें तो भिन्न-भिन्न वस्तुएं हैं; परन्तु यह डिब्बा रिक्त है, हम रिक्त अथवा खाली स्थानको रिक्त नहीं कहकर राम-राम कहते हैं।"

संन्यासीकी आंखें खुलीकी खुली रह गईं।

जिस बातके लिये मैं दर-दर भटक रहा था, वो बात मुझे आज एक व्यापारीसे समझमें आ रही है।

वो संन्यासी उस छोटेसे व्यापारीके चरणोंमें गिर पडा। "ओह, तो रिक्त स्थानमें राम रहते हैं। सत्य है भाई, भरे हुए स्थानमें रामको स्थान कहां ?"

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान, ईर्ष्या, द्वेष और भली-बुरी, सुख-दु:खकी बातोंसे जब मन भरा रहेगा तो उसमें ईश्वरका वास कैसे होगा ?

राम अर्थात ईश्वर तो रिक्त अर्थात स्वच्छ और सरल मनमें ही निवास करते हैं। एक छोटीसे व्यापारीने संन्यासीको बहुत बडी बात समझा दी थी।

आज संन्यासी अपने आनन्दमें था; क्योंकि जिसे वो ढूंढ रहा था, आज उसे पता चल गया कि वो ईश्वर उसे कैसे और कहां मिलेगा ?

## घरका वैद्य

**मक्का (भाग-११)**

* **गर्भावस्थामें है सहायक :** मां और बच्चे दोनोंके लिए गर्भावस्थाके मध्य इसके कई लाभ हैं। मक्का 'फोलिक एसिड'से भरे होते हैं, इसमें 'जेक्सैन्थिन' और रोगनाशक अम्ल होता है जो बच्चेमें जन्म दोषोंके कष्टको कम करता है। यह बच्चेको मांसपेशियोंके विकृति और शारीरिक समस्याओंसे

बचा सकता है। इसकी उच्च 'फाइबर' सामग्रीके कारण, यह मलबद्धताको (कब्जको) दूर करता है । जो गर्भावस्थामें माताओंके लिए एक सामान्य चिन्ताका विषय है। गर्भावस्थामें भी भुट्टा खाना लाभकारी सिद्ध हो सकता है। कारण यह है कि इसमें 'कैल्शियम', 'आयरन' और 'फोलिक एसिड'के साथ-साथ 'विटामिन सी', 'डी' और 'ए' पाया जाता है। इसके साथ ही इसमें 'फोलिक एसिड' और 'विटामिन-बी' होनेवाले शिशुमें 'न्यूरल ट्यूब' दोषसे (शिशुके मस्तिष्क व रीढमें विकार उत्पन्न होनेसे) सुरक्षा मिलनेमें सहायता प्राप्त होती है । गर्भावस्थामें शर्कराकी (जेस्टेशनल डायबिटीजकी) समस्यामें चिकित्सक पौष्टिक आहारमें मक्का लेनेका भी सुझाव देते हैं । इन सभी तथ्योंको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि मक्काका प्रयोग गर्भावस्थामें लाभकारी परिणाम प्रदर्शित कर सकता है । गर्भवती महिलाओंको भी मक्काको अपने आहारमें अवश्य रखना चाहिए । इसमें 'फॉलेट' और 'विटामिन बी' अच्छी मात्रामें पाया जाता है, जो कि गर्भस्थ शिशुमें नई कोशिकाओंके विकासके लिए आवश्यक होता है । 'फॉलेट' गर्भावस्थामें मां और शिशु, दोनोंके लिए बहुत उपयोगी होता है । इसमें कई प्रकारके 'विटामिन्स' और खनिज पाए जाते हैं, जो गर्भावस्थामें बहुत लाभकारी होते हैं; किन्तु आपको किसी प्रकारकी स्वास्थ्यकी समस्या है तो चिकित्सकसे भी परामर्श लेना चाहिए।

**ताईवान पर ३९ गुना बढे चीनी 'साइबर' आक्रमण : विदेश मन्त्रालय लक्ष्यपर, भारत शासन पूर्वमें ही लगा चुका है 'चाइनीज ऐप्स'पर प्रतिबन्ध**

ताईवान विदेश मन्त्रालयके संगणक प्रणालीमें होनेवाले 'चाइनीज साइबर' आक्रमणोंकी संख्या २०१८ से २०२० की तुलनामें ३९ गुना बढ गई है । ताईवानके 'ताईपेई टाइम्स'में प्रकाशित एक विवरणमें इसकी सूचना दी गई है।

**चीनद्वारा 'डेटा हैकिंग'की आशंकाओंके चलते भारत शासन कई 'चाइनीज ऐप्स' पर प्रतिबन्ध लगा चुका है।**

**********

**काष्ठकार गुलफामने पैसोंके लिए हिन्दू महिलाकी हत्या की**

लखनऊके घरमें कार्य करनेवाले काष्ठकारद्वारा पैसोंकी अनावश्यक मांगकी पूर्ति न होनेपर हिन्दू महिलाकी हत्या कर दी गई और हत्यारा भागनेमें सफल हो गया। सूचनाके अनुसार लखनऊके थाना गोमती नगरमें चिकित्सक हर्ष अग्रवाल अपनी पत्नी और बेटियोंके साथ रहते हैं। घटनाके समय हर्ष अग्रवालके घर उनकी पत्नी, दो बच्चे, सेवक नंदलाल और काष्ठकार (बढई) गुलफाम घरमें उपस्थित था । घर पर उपस्करका (फर्नीचरका) कार्य चल रहा था । इस मध्य गुलफामने रुचिसे अकारण पैसोंकी मांग की जिस पर रुचिने कुछ क्षण पश्चात आनेको कहा। इस बातसे गुलफाम खिन्न हो गया और उसने महिलाको मार डाला।

पुलिसने आरोपी गुलफामको बन्दी लिया है और कार्रवाई की जा रही है।

**म्लेच्छोंद्वारा हिन्दुओंसे घृणा करना सर्व विदित है;**

**तथापि हिन्दुओंद्वारा उन्हें अपने घरमें आने देना अविवेकका परिचय देना ही है । न जाने हिन्दुओंको कब बुद्धि आएगी और वे सतर्क होंगे ! (०१.०४.२०२१)**

**********

**मुसलमान युवकने 'टॉफी'का प्रलोभन देकर छोटी बच्चीसे किया दुष्कर्म**

झारखंडमें एक मुसलमान युवकको पुलिसने दुष्कर्मके कारण बन्दी बनाया है । २८ वर्षीय मुसलमान युवक मोहम्मद इकबालने ७ वर्षीय बच्चीसे दुष्कर्म किया है । बच्ची अपने खेतमें खेल रही थी तो वह बच्चीको 'टॉफी'का प्रलोभन देकर अपनी खाद्य-सामग्री बेचनेकी आपणिमें ले गया, जहां उसने दुष्कर्म किया । उसने बच्चीको धमकाया कि यदि उसने किसीको बताया तो वह उसके माता-पिताकी हत्या कर देगा ।

भयभीत बच्चीने रोते हुए घरपर पहुंचकर अपने माता-पिताको सब कुछ बता दिया तो उन्होंने डोरंडाके थानामें जाकर प्रकरण प्रविष्ट करा दिया । दुष्कर्मके साथ-साथ आपराधिक धमकियां देनेके कारण, उसपर प्राथमिकी प्रविष्ट कर दी गई । पुलिसने उसे बन्दी बना लिया उसे कारावासमें डाल दिया गया ।

**ऐसे अपराधियोंको मृत्युदण्ड ही दिए जानेकी मांग सभी हिन्दुओंको करनी चाहिए । (०१.०४.२०२१)**

**********

**ममता बनर्जीने लोगोंको उकसा 'मॉब जस्टिस' हेतु किया प्रेरित**

बंगाल राज्यके विधानसभा चुनावके दूसरे चरणके मतदानसे पूर्व मुख्यमन्त्री ममता बनर्जीने मंगलवारको 'मॉब जस्टिस'का समर्थन करते हुए नंदीग्राममें लोगोंको अपनी

राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी भाजपाके विरुद्ध हिंसा भडकाने हेतु प्रेरित किया । समाचारके अनुसार नंदीग्राममें एक विशाल सभाको सम्बोधित करते हुए ममता बनर्जीने चुनावके मध्य सामाजिक अशान्ति प्रसारित करने हेतु लोगोंको न्याय व्यवस्थासे सम्बन्धित प्रकरणको अपने हाथमें लेने हेतु कहा । सामाजिक जालस्थलोंपर साझा होते ६ 'मिनट'के इस भाषणमें उन्होंने कहा कि यदि कोई बाहरी व्यक्ति दिखता है तो माताएं समूहमें रसोईके पात्रोंके साथ बाहर आएं !

**सत्ता प्राप्त करने हेतु राजनेता किसी भी स्तरतक जाने हेतु तत्पर रहते हैं । अब इस हेतु राष्ट्रमें भले उपद्रव ही क्यों न करवाना पडे वह इससे भी नहीं चूकते । ऐसे अनेक प्रकरण हमें चिरकालसे दृष्टिगत हो रहे हैं । अब आनेवाले चुनावोंमें हिन्दुओंको बुद्धिमानीके साथ अपने मतका प्रयोग करना परम आवश्यक है ।**

**********

**'व्हाट्स ऐप्प' 'वॉइस नोट'से चलचित्र कलाकारोंको मादक द्रव्य विक्रय करता था एजाज खान, तत्पश्चात करता था 'डिलीट ': शादाब बटाटाके समक्ष होगी पूछताछ**

मादक द्रव्य विक्रयके आरोपमें 'एनसीबी'ने अभिनेता एजाज खानको बन्दी बनाकर ३१ मार्च, २०२१को न्यायालयके समक्ष प्रस्तुत किया । अब उसे शादाब बटाटाके समक्ष बैठाकर पूछताछ की जाएगी । 'एनसीबी'को साक्ष्य मिले हैं, जिसमें एजाज मादक द्रव्य क्रय करने हेतु धन अन्तरित (ट्रान्सफर) करनेकी बात कर रहा है । एजाज यह मादक द्रव्य चलचित्र कलाकारों तथा दूरदर्शनके विशिष्ट व्यक्तियोंको उपलब्ध करवाता था । इस हेतु वह 'व्हाट्सऐप्प'के 'वॉइस नॉट फीचर'का उपयोग करता था, तथा सन्देश देनेके उपरान्त उस

सन्देशको 'डिलीट' कर देता था।

गृहबन्दीके कालमें एजाज खान अनेक कलाकारोंको अधिक मात्रामें मादक द्रव्य क्रय करके रखनेका परामर्श देता था।

**सुशान्तकी सन्दिग्ध मृत्युकी जांच करते करते जब 'सीबीआई'को ज्ञात हुआ कि 'बॉलीवुड'में मादक द्रव्य व्यापार अपने चरमपर है तो 'एनसीबी' अब एक-एककर इसमें लिप्त कलाकारोंको ढूंढ रही है। सभ्यता दर्शानेवाले, आदर्श बनकर चलचित्रमें प्रस्तुत होनेवाले 'बॉलीवुड'का यह रूप देखकर जनमानस चकित है। (०१.०४.२०२१)**

**********

**मन्दिरके दानपात्रमें मिला निरोध, नवाज अब जीवित नहीं : रहीम-तौफीकने भगवानकी शरणमें स्वीकारा अपना जघन्य अपराध**

कर्नाटकके मेंगलुरुमें स्वामी कोरगज्जाके मन्दिरमें इसी वर्ष जनवरीमें जिहादियोंने दानपात्रमें निरोध डाला था। पूर्वके दिनों कोरगज्जाके मन्दिरमें अनेक अभद्र घटनाएं हुईं थीं। ऐसे घृणित कृत्यके पश्चातभी पुलिस आरोपियोंको ढूंढनेमें असमर्थ थी।

इस मन्दिरको लेकर स्थानीय लोगोंके मनमें अपार आस्था है। दुःखी श्रद्धालु निरन्तर कोरगज्जा भगवानसे ऐसे जिहादियोंको दण्ड देनेके लिए प्रार्थना कर रहे थे। तीन दिन पूर्व भगवानने अपने श्रद्धालुओंकी सुनी और ऐसी स्थिति बनी कि जिहादी स्वयं मन्दिरमें आकर पुजारीके समक्ष क्षमाके लिए प्रार्थना करने लगे।

जिहादियोंमेंसे एक नवाज क्षमा मांगने हेतु जीवित नहीं था। इस कुकृत्यके पश्चात उसे एक दिन रक्तवमन हुआ और वमनके कारण उसके मलसे रक्त निकला। अन्तमें वह अपने घरकी

भीतोंपर सिर मारते-मारते मर गया । उस समय उसने उन्हें बताया कि कोरगज्जा उन सबपर क्रोधित हैं।

अब मात्र अब्दुल रहीम और अब्दुल तौफीक ही जीवित हैं; किन्तु कुछ समय पश्चात रहीमको भी रक्तके वमन आरम्भ होगए, जैसे नवाजको हुए थे।

पुलिसने दोनोंको बन्दी बना लिया है । दोनों अब भी भयभीत हैं । कोरगज्जा भगवानको लेकर लोगोंका अनुमान बताया है कि वह अपने न्यायके लिए जाने जाते हैं और दोषीको १००% दण्ड मिलता है।

**ऐसे अनेक दृष्टान्त समय-समयपर दृष्टिगोचर होते आए है जब भगवानने जिहादियोंको उचित दण्ड दिया है । हिन्दुओ, यह सब देखकर भी यदि दृष्टि न खुली तो हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके पूर्व सभी नाम मात्र हिन्दुओंको नष्ट होनेसे कोई बचा नहीं पाएगा; अतः अपने धर्म और संस्कृतिकी रक्षा हेतु सज्ज रहें !**

**********

## वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

**१.** वैदिक उपासना पीठद्वारा विजयादशमीसे अर्थात दि. २५/१०/२०२० से ऑनलाइन बालसंस्कारवर्गका शुभारंभ हो चुका है। यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होगा। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

**२.** वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले

पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया जा चुका है।

**आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :**

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरण यथाशीघ्र कराएं । इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें । कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें।

**अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :**

**अ.** नवधा भक्ति - ४ अप्रैल रात्रि ९:३० बजे

**आ.** शंका समाधान - ८ अप्रैल रात्रि ९:३० बजे

**इ.** नववर्षारंभदिन एवं उसे मनानेका शास्त्र - १२ अप्रैल रात्रि ९:३० बजे

**३.** वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार रात्रि नौसे साढे नौ बजे 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको प्रत्येक सप्ताह 'ऑनलाइन सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोतर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाएगा, यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

**४.** जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें, 'हमें कृपया

अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

**५.** कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है। इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, "हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।"

**६.** वैदिक उपासना पीठद्वारा आवश्यक सूचना :
यदि आप संस्कृत सीखने हेतु इच्छुक हैं; किन्तु आपको आस-पास कहीं जाकर इसे सीखनेका समय नहीं मिल रहा है, तो आप घर बैठे इस दैवी भाषाको सीख सकते हैं ! उपासनाकी ओरसे यह 'ऑनलाइन' संस्कृत वर्ग साप्ताहिक होता है ! जो भी इस भाषाको सीखना चाहते हैं, वे हमें ९३५६७६६२२१ (9356766221) सम्पर्क क्रमांकपर सूचना दें !


प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915